UNIT - I[st] B.Ed

मनोविज्ञान एवं अधिगमकर्ता

शिक्षा का अर्थ → शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की शिक्ष धातु में अ प्रत्यय लगाने से बना है शिक्ष का अर्थ है सीखना और सिखाना। शिक्ष शब्द का शाब्दिक अर्थ हुआ – सीखने व सिखाने की क्रिया। शिक्षा शब्द के लिए अंग्रेजी में एजुकेशन शब्द का प्रयोग किया जाता है, एजुकेशन शब्द लैटिन भाषा के एडुकेटम Educatum शब्द से लिया गया है इस भाषा के ए E का अर्थ है अंदर से जबकि ड्यूको Duco का अर्थ है आगे बढ़ाना। इसका अर्थ हुआ। अंदर से आगे बढ़ाना।

प्रत्येक बालक के अंदर जन्म के समय कुछ कुछ जन्मजात शक्तियाँ बीज रूप में विद्यमान रहती है उचित वातावरण के सम्पर्क में आने पर ये शक्तियाँ विकसित हो जाती है।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार → "मनुष्य की पूर्वनिहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना शिक्षा है।"

महात्मा गाँधी के अनुसार → "शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक तथा मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क तथा आत्मा के सर्वांगीण सर्वोत्तम विकास से है।"

अरस्तू के अनुसार → "स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण करना ही शिक्षा है।"

शिक्षा मनोविज्ञान Educational Psychology

शिक्षा मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो शिक्षा सम्बन्धी व्यवहार का अध्ययन करता है

ट्रो एवं मैक्सवेल के अनुसार → "शिक्षा मनोविज्ञान का सम्बन्ध शिक्षण के मानवीय पक्ष से है।"

शिक्षा मनोविज्ञान का विषय क्षेत्र

1. वंशानुक्रम
2. विकास
3. वैयक्तिक विभिन्नताएँ
4. अधिगम
5. मनोशारीरिक तत्व
6. मानसिक प्रक्रियाएँ
7. मानसिक स्वास्थ्याएँ
8. व्यक्तित्व और समायोजन
9. मापन एवं मूल्यांकन
10. मनोवैज्ञानिक प्रयोग
11. पाठ्यक्रम निर्माण
12. शिक्षण विधियाँ
13. विशिष्ट बालक
14. निर्देशन एवं परामर्श

शिक्षा मनोविज्ञान की प्रमुख विधियाँ

- निरीक्षणात्मक विधियाँ
  - अन्तर्दर्शन विधि
  - बहिर्दर्शन या अवलोकन विधि
  - प्रयोगात्मक विधि
- विवरणात्मक विधियाँ
  1. विकासात्मक विधि
  2. व्यक्ति इतिहास विधि
  3. साक्षात्कार विधि
  4. प्रश्नावली विधि
  5. तुलनात्मक विधि
  6. मनोवैज्ञानिक विधि
  7. मनोविश्लेषणात्मक विधि
  8. परीक्षण विधि
  9. निदानात्मक विधि
  10. सांख्यिकीय विधि

मनोविज्ञान का शिक्षा पर प्रभाव

① मनोविज्ञान और शिक्षा का सम्प्रत्यय
② मनोविज्ञान और शिक्षा के उद्देश्य
③ मनोविज्ञान और शिक्षा की पाठ्यचर्या
④ मनोविज्ञान और शिक्षण विधियाँ
⑤ मनोविज्ञान और अनुशासन
⑥ मनोविज्ञान और शिक्षक
⑦ मनोविज्ञान और शिक्षार्थी
⑧ मनोविज्ञान और विद्यालय

व्यक्तिगत विभिन्नताएँ (असाधारण बालक)

व्यक्तिगत विभिन्नताओं से हमारा तात्पर्य व्यक्तित्व के उन सभी पहलुओं से है जिनका मापन व मूल्यांकन किया जा सकता है।

टायलर के अनुसार — "शरीर के रूप, रंग, आकार, कार्य, गति, बुद्धि, ज्ञान, उपलब्धि, रुचि, अभिरुचि आदि लक्षणों में पायी जानेवाली भिन्नता को व्यक्तिगत भिन्नता कहते हैं।"

व्यक्तिगत विभिन्नताओं के प्रकार

① बुद्धिस्तर पर आधारित विभिन्नता
② शारीरिक विकास में विभिन्नता
③ उपलब्धि में भिन्नता
④ अभिवृत्ति में विभिन्नता
⑤ व्यक्तित्व विभिन्नता
⑥ गत्यात्मक योग्यताओं में विभिन्नता
⑦ लिंग विभिन्नता के कारण भेद
⑧ जाति या राष्ट्र सम्बन्धी विभिन्नता
⑨ सामाजिक विभिन्नता
⑩ संवेगात्मक विभिन्नता
⑪ विशिष्ट योग्यताओं में विभिन्नता

BULANDSHAHR

कारण

1. वंशानुक्रम
2. वातावरण
3. जाति, प्रजाति एवं देश
4. आयु एवं बुद्धि
5. परिपक्वता
6. लिंग-भेद

व्यक्तिगत विभिन्नताओं का शैक्षिक महत्व

1. कक्षा का वर्गीकरण
2. कक्षा का आकार
3. व्यक्तिगत शिक्षण
4. शारीरिक दोषों की ओर ध्यान
5. लिंगभेद के अनुसार शिक्षा
6. पाठ्यक्रम
7. गृहकार्य
8. शिक्षण-विधि
9. निर्देशन

व्यक्तिगत विभिन्नताओं पर आधारित प्रविधियाँ

1. प्रोजेक्ट प्रणाली
2. डाल्टन प्रणाली
3. विनेटिका प्रणाली
4. डेक्रोली प्रणाली
5. कान्ट्रेक्ट प्रणाली
6. क्रिया-योजना
7. अभिक्रमित अनुदेशन
8. किण्डरगार्टन प्रणाली
9. मान्टेसरी प्रणाली
10. ह्यूरिस्टिक पद्धति
11. बेसिक शिक्षा प्रणाली

व्यक्तिगत भिन्नताओं के प्रकार

1. असाधारण बालक
2. पिछड़े बालक
3. बाल-अपराधी बालक
4. मेधावी अथवा प्रतिभाशाली छात्र
5. मानसिक मंदन
6. धीमी गति से सीखने वाला

प्रतिभाशाली बालकों की पहचान

① बुद्धि परीक्षण
② उपलब्धि परीक्षाएँ
③ अभिरुचि परीक्षाएँ
④ सम्बन्धित व्यक्तियों से प्राप्त सूचनाएँ
⑤ डीहान और कफ की सूची के आधार पर

प्रतिभाशाली बालकों की शिक्षा व्यवस्था

① विशेष कक्षाओं की व्यवस्था
② विस्तृत पाठ्यक्रम का निर्माण
③ विशिष्ट शिक्षण विधियों का प्रयोग
④ पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं का आयोजन
⑤ विशेष अध्ययन की सुविधा
⑥ विशेष गृहकार्य
⑦ योग्य व प्रतिभाशाली शिक्षक
⑧ अन्य सुविधाएँ

पिछड़ेपन बालक के कारण

① सामान्य बुद्धि की कमी
② शारीरिक कारण
③ परिवार का वातावरण
④ विद्यालय का वातावरण
⑤ संवेगात्मक कारण
⑥ पिछड़ेपन के अन्य कारण

पिछड़े बालकों की शिक्षा व्यवस्था

① विशिष्ट विद्यालय

2. विशिष्ट कक्षाएँ
3. विशिष्ट पाठ्यक्रम
4. विशिष्ट शिक्षण विधियाँ
5. विशिष्ट शिक्षक
6. पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएँ
7. समय-सारणी
8. परीक्षा प्रणाली
9. मूल्यांकन
10. शारीरिक परीक्षण
11. निर्देशन सेवाएँ

पिछड़े बालकों की समस्याएँ

1. स्कूल सम्बन्धी समस्यायें
2. सामाजिक समस्यायें
3. संवेगात्मक समस्यायें

UNIT-II

मानव विकास HUMAN DEVELOPMENT

सी० ई० स्किनर—" विकास जीव और उसके वातावरण की अन्तःक्रिया का प्रतिफल है।

अभिवृद्धि शब्द का प्रयोग सामान्यतः शरीर और उसके अंगों के भार तथा आकार में वृद्धि के लिए किया जाता है इस वृद्धि को नापा और तौला जा सकता है विकास का सम्बन्ध अभिवृद्धि से अवश्य होता है पर यह शरीर के अंगों में होने वाले परिवर्तनों को विशेष रूप से व्यक्त करता है।

हरलॉक के अनुसार → " विकास, अभिवृद्धि तक ही सीमित नहीं है इसके बजाय इसमें परिपक्वावस्था के लक्ष्य की ओर परिवर्तनों का प्रगतिशील क्रम निहित रहता है विकास के परिणामस्वरूप व्यक्ति में नवीन विशेषताएँ और नवीन योग्यताएँ प्रकट होती हैं।"

विकास क्रम में होने वाले परिवर्तन

① आकार परिवर्तन
② अंग-प्रत्यंगो के अनुपात में परिवर्तन
③ कुछ चिह्नों का लोप
④ नवीन चिन्हों का उदय

अभिवृद्धि व विकास के सिद्धान्त

① समान प्रतिमान का सिद्धान्त
② सामान्य से विशिष्ट क्रियाओं का सिद्धान्त
③ सतत विकास का सिद्धान्त
④ परस्पर सम्बन्ध का सिद्धान्त
⑤ शरीर के विभिन्न अंगों के विकास की गति में भिन्नता का सिद्धान्त
⑥ विकास की दशा का सिद्धान्त

7 व्यक्तिगत विभिन्नताओं का सिद्धान्त
8 भिन्नता का सिद्धान्त

मानव विकास को प्रभावित करनेवाले तत्व

1 वंशानुक्रम
2 वातावरण
3 बुद्धि
4 लिंग
5 अन्तःस्त्रावी ग्रन्थियाँ
6 जन्मक्रम
7 भयंकर रोग
8 चोट
9 पोषाहार
10 शुद्ध वायु एवं प्रकाश
11 प्रजाति

विकास की अवस्थाएँ

1 शैशव अवस्था 1 से 5 वर्ष तक
2 बाल्यावस्था 5 से 12 वर्ष तक
3 किशोरावस्था 12 से 18 वर्ष तक
4 प्रौढ़ावस्था 18 से ऊपर

शैशवावस्था

जीवन के पहले चार पाँच वर्ष में बालक भावी जीवन की नींव रख लेता है।

शारीरिक विकास की विशेषता

1. शारीरिक विकास में तीव्रता आकार एवं भार
2. अनुपात में परिवर्तन
3. दाँतों का विकास
4. हड्डियों का विकास
5. मांसपेशियों का विकास
6. नाड़ी संस्थान
7. पाचन प्रणाली

बौद्धिक विकास

1. भाषा का विकास
2. प्रश्न पूछना
3. ज्ञानइन्द्रियों का विकास
4. रुचियों का विकास
5. कल्पना शक्ति का विकास
6. संवेगात्मक विकास

सामाजिक विकास

1. स्वयं केन्द्रित बालक
2. माता पिता पर आश्रित
3. सामाजिक खेल का विकास
4. स्पर्धा की भावना
   मैत्री और सहयोग

शैशवावस्था में संवेगात्मक विकास
शैशवावस्था में ज्ञानात्मक विकास

किशोरावस्था

किशोरावस्था प्रबल दबाव, तनाव, तूफान एवं संघर्ष का काल है
यह आयु Teens की समाप्ति तथा Twenties का प्रारम्भ है।

किशोरावस्था की प्रमुख समस्याएँ

1. स्वतन्त्रता की समस्या
2. स्थिरता व समायोजन की समस्या
3. विरोधी मनोभावों की समस्या
4. प्रबल, जिज्ञासा की समस्या
5. आत्म गौरव की समस्या
6. आत्मगौरव की समस्या
7. कल्पनाशील क्रियाओं की समस्या
8. व्यवसाय-चयन की समस्या
9. नैतिक और सामाजिक मूल्यों की समस्या
10. यौन समस्याएँ

किशोरावस्था के विकास की अवस्थाएँ

1. स्वप्रेम
2. समलिंग कामुकता
3. विषमलिंग कामुकता

किशोरावस्था में शिक्षा का स्वरूप

1. शारीरिक शिक्षा की व्यवस्था
2. बौद्धिक क्रियाओं के आयोजन की व्यवस्था
3. संवेगों का प्रशिक्षण
4. सामाजिकता की शिक्षा
5. पाठ्यक्रम का विभिन्नीकरण
6. उपयुक्त शिक्षण विधियों का प्रयोग
7. धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा
8. व्यावसायिक निर्देशन
9. शैक्षिक पर्यटन
10. व्यावसायिक एवं रचनात्मक शिक्षा
11. जीवनदर्शन की शिक्षा
12. यौन शिक्षा
13. उत्तरदायित्व के कार्य
14. लोकतान्त्रिक वातावरण
15. सृजनात्मक कार्यों की व्यवस्था

किशोरों के लिए निर्देशन एवं परामर्श

1. व्यक्तिगत दृष्टि से
2. शैक्षिक दृष्टि से

③ संवेगात्मक द्रष्टि से ④ यौन शिक्षा की द्रष्टि से
⑤ सृजनात्मक द्रष्टि से ⑥ सर्वांगीण द्रष्टि से

बाल्यावस्था

इस (विकास) अवस्था को मानव विकास का अनोखा काल कहते हैं। इस अवस्था में बालक पहले तीन वर्षों में बहुत तेजी से बढ़ता है। लेकिन 3 से 6 वर्ष में धीमी गति से बढ़ता है।

शारीरिक विकास

① शारीरिक अनुपात
② माँसपेशियों का तालमेल
③ नाड़ी संस्थान
④ नये दाँतों का निकलना
⑤ भार में धीमी वृद्धि
⑥ कद में धीमी वृद्धि
⑦ उत्तर बाल्यकाल में वृद्धि के प्रकार

बौद्धिक विकास

① शब्दकोश का विकास
② प्रत्ययों का विकास
③ रुचियों का विकास
④ ज्ञानेन्द्रियों का विकास
⑤ विचार शक्ति का विकास
⑥ प्रश्न पूछना

संवेगात्मक विकास

① स्थिरता तथा नियन्त्रण की अवधि
② संवेगों का उचित प्रदर्शन
③ भाई-बहिनों से ईर्ष्या
④ सामूहिक भावनाओं का विकास
⑤ झूठ बोलना

सामाजिक विकास

① छोटे समूहों में खेलना
② दूसरों से स्नेह की अपेक्षा
③ दल के प्रति वफादारी
④ सहयोग की भावना
⑤ आदतों का निर्माण
⑥ लिंग विभाजन का समय
⑦ मित्रों का चुनाव
⑧ सामाजिक सूझ का विकास
⑨ नेता बनने की इच्छा
⑩ प्रिय कार्यों में रुचि

संज्ञानात्मक विकास

गामक विकास → इस अवस्था में उसके शारीरिक अंगो, स्नायु तंत्र तथा मॉसपेशियों का और भी विकास हो जाता है जिससे वह अधिक से अधिक गामक क्रियाएँ करने में सक्षम हो जाता है।

जीन पियाजे के संज्ञानात्मक विकास की अवस्थाएँ

① संवेदी पेशीय अवस्था →
- ① सहज क्रियाओं की अवस्था
- ② प्रमुख वृतीय अनुक्रियाओं की अवस्था
- ③ गौण वृतीय अनुक्रियाओं की अवस्था
- ④ गौण स्कीमा के समन्वय की अवस्था
- ⑤ तृतीय वृतीय अनुक्रियाओं की अवस्था
- ⑥ मानसिक संयोग द्वारा नए साधनों की खोज की अवस्था

BULANDSHAHR

② प्राक्संक्रियात्मक अवस्था →
- ① प्राक्सम्प्रत्यात्मक अवस्था
- ② अन्तर्दर्शी अवस्था

③ मूर्त संक्रिया की अवस्था →

④ औपचारिक संक्रिय अवस्था →

"कल्पना सृष्टि का नायक स्वयं शिशु ही होता है।" फ्रायड -

"शैशवावस्था को सीखने का आदर्शकाल वैलेण्टाइन ने कहा।

"वंशानुक्रम व्यक्ति की जन्मजात विशेषताओं का सम्पूर्ण योग है" बी० एन० झा०

UNIT-III

सीखना एवं अभिप्रेरणा LEARNING AND MOTIVATION

चार्ल्स०ई० स्किनर - "सीखना, व्यवहार में उत्तरोत्तर सामन्जस्य की प्रक्रिया है।"

सीखना ही शिक्षा है और दोनों ही एक क्रिया की ओर संकेत करते हैं। सीखना तथा शिक्षा दोनों ही जीवन पर्यन्त तथा सर्वत्र चलती रहती है।

क्रो व क्रो के अनुसार → "सीखना, आदतों, ज्ञान और अभिवृत्तियों का अर्जन है"

वुडवर्थ के अनुसार → "नवीन ज्ञान और नवीन प्रतिक्रियाओं को प्राप्त करने की प्रक्रिया, सीखने की प्रक्रिया है।"

विशेषता

1. सीखना सार्वभौमिक है।
2. सीखना सम्पूर्ण जीवन चलता है।
3. सीखना विकास है।
4. सीखना परिवर्तन है।
5. सीखना अनुकूलन है।
6. सीखना, अनुभवों का संगठन है।
7. सीखना उद्देश्यपूर्ण है।
8. सीखना विवेकपूर्ण है।
9. सीखना सक्रिय है।
10. सीखना व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों है।
11. सीखना वातावरण की उपज है।
12. सीखना खोज करना है।

सीखना की प्रक्रिया में सोपान

1. अभिप्रेरणा
2. उद्देश्य
3. बाधा
4. विभिन्न संभावित अनुक्रियाएँ
5. पुनर्बलन
6. संगठन

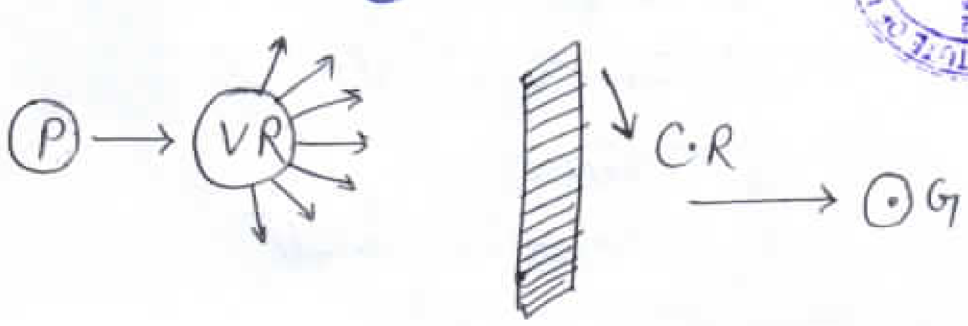

P = Person

VR = Various Responeses

B = Barrier

CR = Correct Responeses

G = Goal

अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक

1) शिक्षार्थी से सम्बन्धित कारक →

1. बालक
2. सीखने की इच्छा
3. शैक्षिक पृष्ठभूमि
4. शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य
5. परिपक्वता
6. अभिप्रेरणा
7. सीखने वाले की अभिवृत्ति
8. सीखने का समय
9. बुद्धि
10. अधिगम प्रक्रिया

2) शिक्षक से सम्बन्धित कारक →

1. विषय का ज्ञान
2. शिक्षक का व्यवहार
3. मनोविज्ञान का ज्ञान
4. शिक्षण-विधि
5. व्यक्तिगत भेदों का ज्ञान
6. व्यक्तित्व
7. बालक केन्द्रित शिक्षा
8. समयसारणी

BULANDSHAHR

(9) पाठ्यसहगामी क्रियायें
(10) अनुशासन

(3) पाठ्यवस्तु से सम्बन्धित कारक →

(1) विषयवस्तु की प्रकृति
(2) विषयवस्तु का आकार
(3) विषयवस्तु का क्रम
(4) उदाहरण प्रस्तुतीकरण
(5) भाषाशैली
(6) दृश्य श्रव्य सामग्री
(7) रुचिकर विषयवस्तु
(8) विषयवस्तु की उद्देश्यपूर्णता
(9) विषयवस्तु की संरचना
(10) विभिन्न विषयों का कठिनाई स्तर

(4) अधिगम व्यवस्था से सम्बन्धित कारक →

(1) सम्पूर्ण बनाम खण्ड विधि
(2) उपविषय बनाम संकेन्द्रीय विधि
(3) संकलित बनाम वितरित विधि
(4) आयोजित बनाम प्रासंगिक विधि
(5) सक्रिय बनाम निष्क्रिय विधि

(5) वातावरण से सम्बन्धित कारक →

(1) वंशानुक्रम
(2) सामाजिक वंशक्रम का ज्ञान
(3) वातावरण का प्रभाव
(4) शिक्षा के अनौपचारिक साधन
(5) व्यक्तित्व का विकास
(6) परिवार का वातावरण
(7) कक्षा का भौतिक वातावरण

(8) मनोवैज्ञानिक वातावरण

(9) सम्पूर्ण परिस्थिति

(10) मनोवैज्ञानिक वातावरण

(1) थार्नडाइक का अनुबन्धन सिद्धान्त

सन् 1913 मे थार्नडाइक के द्वारा अधिगम के एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। इसे अनेक नामों से जाना जाता है। (1) प्रयत्न एवं भूल का सिद्धान्त (2) उद्दीपन अनुक्रिया सिद्धान्त (3) सम्बन्धो का सिद्धान्त

थार्नडाइक का प्रयोग → (1) बिल्ली
(2) चूहे
(3) मछलियाँ
(4) Mirror Drawing Experiment

थार्नडाइक के सीखने के नियम

(1) तत्परता का नियम →

(2) अभ्यास का नियम → (1) उपयोग का नियम
(2) अनुप्रयोग का नियम

(3) प्रभाव का नियम

गौण नियम

(1) बहु-प्रतिक्रिया का नियम

(2) मानसिक स्थिति का नियम

(3) आंशिक क्रिया का नियम

(4) समानता का नियम

(5) साहचर्य परिवर्तन का नियम

② पॉवलाव का अनुकूलित-अनुक्रिया सिद्धान्त

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन 1904 में रूसी शारीरशास्त्री आई० पी० पॉवलॉव ने किया था।

इस तथ्य की सामान्य अर्थ यह है कि जब दो उत्तेजनायें बार-बार दी जाती हैं पहले नई बाद में मौलिक तो कुछ समय पहली क्रिया भी प्रभावशाली हो जाती है।

पॉवलॉव का प्रयोग → ① कुत्ते

वॉटसन का प्रयोग → ① खरगोश।

सिद्धान्त से सम्बन्धित नियम

① समय सिद्धान्त ② तीव्रता का सिद्धान्त

③ एकरूपता का सिद्धान्त ④ पुनरावृत्ति का सिद्धान्त

⑤ व्यवधान का सिद्धान्त

③ स्किनर का क्रियाप्रसूत सिद्धान्त

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन 1938 में हुई। स्किनर जब पुनर्बलन करने वाला उत्तेजक अथवा कृत्रिम उत्तेजक अनुक्रिया के साथ या तुरन्त बाद नहीं देना चाहिये बल्कि अपेक्षित अनुक्रिया करने के बाद दिया जाना चाहिए। अपेक्षित अनुक्रिया तथा पुनर्बलन इस सिद्धान्त के दो मुख्य केन्द्र बिन्दु हैं और यही कारण है कि इस सिद्धान्त को उद्दीपक -अनुक्रिया के स्थान पर अनुक्रिया -उद्दीपक के रूप में जाना जाता है।

स्किनर ने अपने सिद्धान्त की व्याख्या दो प्रकार के व्यवहारों की व्याख्या से की है →

① प्रसूत व्यवहार → बिना उत्तेजना के कोई अनुक्रिया नहीं होती है अनुक्रियाएं किसी उद्दीपक के कारण होती हैं उन्हे अनुक्रिया व्यवहार कहा जाता है।

सक्रिय व्यवहार स्वेच्छा से होता है तथा किसी उत्तेजक के नियन्त्रण में नहीं होता है।

③ अनुक्रिया व्यवहार → सक्रिय अनुकूलन में सक्रियता से पुनर्बलन मिलता है तथा तुप्तता से कमजोर होता है।
जैसे - रोशनी के आने पर आँखों के पलक झपक जाना तथा आलपिन चुभने पर शरीर के अंगो का मुड़ जाना, प्रतिक्रियात्मक व्यवहार है।

पुनर्बलन क्या है? → पुनर्बलन का तात्पर्य है किसी अनुक्रिया के बार-बार दुहराने की सम्भावना का बढ़ना।

① धनात्मक पुनर्बलन → यह वे उत्तेजक है जो परिस्थिति से जुड़ने पर सक्रिय अनुक्रिया की सम्भावना को बढ़ा देते हैं।

② ऋणात्मक पुनर्बलन → यह वह उत्तेजक है जिसे परिस्थिति से हटा लेने पर सक्रिय अनुक्रिया की सम्भावना को बल मिलता है।

① निश्चित अनुपात अनुसूची
② निश्चित अन्तराल अनुसूची
③ शत-प्रतिशत अनुसूची
④ आंशिक अनुसूची

स्किनर द्वारा किये गये प्रयोग - ① भूखे चूहे को लिवर युक्त संकरे रास्ते वाला
② कबूतरों पर
③ 70 वर्षीय व्यक्ति की आवाज खो जाने वाला

④ सूझ अथवा अन्तर्दृष्टि का सिद्धान्त

सूझ के सिद्धान्त का प्रतिपादन गेस्टाल्टवादियों ने किया था गेस्टाल्ट

सिद्धान्त एक जर्मन स्कूल की देन है। गेस्टाल्ट स्कूल का जन्म सन् 1920 में हुआ।

इस सिद्धान्त के अनुसार प्राणी जो कुछ देखते, सुनते या अनुभव करते हैं उसकी एक पूर्ण आकृति बनती है।

प्रत्येक कार्य या क्रिया को सीखने में हमें सूझ का प्रयोग करना पड़ता है जब हम किसी समस्या का हल सरलता से नहीं निकाल पाते तब हम सूझ द्वारा ही उसे हल करने का प्रयास करते हैं।

कोहलर का प्रयोग →
1. भूखे वनमानुष पर
2. चिम्पांजी पर
3. छत से लटकी दो रस्सी पर

सिद्धान्त के नियम →
1. संरचनात्मकता
2. समानता
3. समीपता
4. समापन
5. निरन्तरता

MANAGEMENT BULANDSHAHR

(5) कर्ट लेविन का क्षेत्र सिद्धान्त

कर्ट लेविन ने अपने मत का आधार वातावरण में व्यक्ति की स्थिति को बताया। उसके अनुसार 'व्यक्ति के व्यवहार को समझने के लिए व्यक्ति की स्थिति को उद्देश्यों से सम्बन्धित मानचित्र में निर्धारित करने एवं प्रयत्नों की जानकारी आवश्यक है।"

लेविन के सिद्धान्त में भर्त्सना, लक्ष्य तथा अवरोधक प्रमुख तत्व हैं।

क्षेत्र सिद्धान्त के प्रमुख आधार →
1. क्षेत्र
2. जीवन विस्तार
3. व्यक्ति
4. विदेशी माल

(5) तत्त्वरूप

(6) सदिश

(7) कर्षणशक्ति

(8) अवरोध

(9) द्वन्द्व

अभिप्रेरणा (MOTIVATION)

अभिप्रेरणा को अंग्रेजी मे Motivation कहते हैं Motivation शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के मॉटम शब्द से हुई है जिसका अर्थ है मोटर, मोशन आदि। प्रेरणा के उपयुक्त शाब्दिक अर्थों मे बालक के व्यवहार को संचालित करने वाली शक्ति का बोध होता है।

अभिप्रेरणा वह आन्तरिक शक्ति है जो अनेक उद्दीपनों का परिणाम होती है जिसके माध्यम से बालक निश्चित व्यवहार की दिशा मे सक्रिय तथा नियन्त्रित होता है।

गुड के अनुसार — "क्रिया को उत्तेजित करने, नियन्त्रित करने तथा नियन्त्रित रखने की प्रक्रिया को अभिप्रेरणा कहते हैं।"

स्किनर के अनुसार — "प्रेरणा सीखने के लिये राजमार्ग है।"

प्रेरकों का वर्गीकरण

(1) आन्तरिक अभिप्रेरणा

(2) बाह्य अभिप्रेरणा

प्रेरणा से संबन्धित पद

(1) आवश्यकता

(2) चालक

(3) प्रोत्साहन

(4) प्रेरक   प्रेरक = आवश्यकता + चालक + प्रोत्साहन

सीखने के मनोविज्ञान में प्रेरणा का महत्व एवं उपयोग

"प्रेरणा यह तय करती है कि व्यक्ति कितना सही सीखेगा तथा कितने समय तक सीखता रहेगा।

(1) व्यवहार को नियन्त्रित करना
(2) रुचि का विकास
(3) ध्यान केन्द्रित करने में सहायक
(4) मानसिक विकास में सहायक
(5) लक्ष्य प्राप्ति में सहायक
(6) चरित्र निर्माण में सहायक
(7) अनुशासन की दृष्टि से
(8) पाठ्यक्रम में सुधार
(9) अध्यापन विधियों में सुधार

अभिप्रेरणा की प्रविधियाँ

(1) पुरस्कार एवं दण्ड
(2) प्रशंसा एवं निन्दा
(3) सफलता एवं असफलता
(4) प्रतियोगिता एवं सहयोग
(5) प्रगति का ज्ञान
(6) आकांक्षा का स्तर
(7) नवीनता
(8) रुचि
(9) आवश्यकताओं का ज्ञान
(10) कक्षा का वातावरण

अभिप्रेरणा देने वाले घटक या स्रोत

(1) उत्तेजना
(2) आकांक्षा
(3) प्रोत्साहन
(4) दण्ड

अभिप्रेरणा के सिद्धान्त

(1) मूल प्रवृत्ति का सिद्धान्त

इसके अंतर्गत मैक्डूगल, जेम्स एवं बर्ट आदि मनोवैज्ञानिकों ने यह

BULANDSHAHR

यह अवधारणा प्रस्तुत की कि व्यक्ति में जन्म से ही व्यवहार की कुछ विशिष्ट प्रवृतियाँ विद्यमान रहती हैं तथा उनके क्रियाशील होने पर व्यक्ति उस प्रकार का व्यवहार करता है जिसके करने से उसकी उस प्रवृति की संन्तुष्टि होती है। मैक्डूगल ने कहा है। Instincts are springs of human behaviour.

① ये जन्मजात होती हैं।
② ये प्रत्येक व्यक्ति में पाई जाती हैं।
③ ये व्यवहार को प्रेरित करती हैं,

14 मूलप्रवृतियाँ होती हैं → शरणागत, संग्रह, सेक्स, दैन्य प्रवृति, आत्मप्रतिष्ठा, जिज्ञासा, लड़ाई झगड़ा, रचनात्मकता, हँसी मजाक, पितृजन्य, सामुदायिकता, घृणा, भाग जाना, खाना पीना।

② सक्रियता सिद्धान्त

① सोलेसबरी सक्रियता सिद्धान्त → इस सिद्धान्त के अनुसार क्रियाशीलता निरन्तर होती है जिसका एक सिरा सबसे कम क्रियाशीलता तथा दूसरा सिरा सबसे अधिक क्रियाशीलता को प्रदर्शित करता है।

② मैल्मो का सक्रियता सिद्धान्त → यह सिद्धान्त सामान्य उत्तेजना स्तर पर निर्भर करता है सामान्य चालक एक स्थिति होती है जो मस्तिष्क की सामान्य उत्तेजना पर निर्भर करती है,

③ लिंड्स्ले सक्रियता सिद्धान्त → वास्तव में उत्तेजना सिद्धान्त का अर्थ Lindsley ने 1951 में अपने अनुसन्धान कार्यों के आधार पर स्पष्ट किया। संवेग की स्थिति में मस्तिष्क में विद्युत तरंगो में क्या परिवर्तन आते हैं विद्युत तरंगों में होने वाले परिवर्तन को नापने के लिये उसने जिस यन्त्र का उपयोग किया उसे संक्षेप में E.E.G कहते हैं।

③ सन्तुलन स्थैर्य सिद्धान्त

① प्राणी की एक पूर्ण के रूप में ऐसी प्रवृति है जिससे वह स्थिरता बनाये रखता है और यदि इसकी स्थिरता भंग होती है, तो वह सन्तुलन प्राप्त करने का प्रयास करता है।

② शरीर के अंगों तथा रक्त की स्थिरता बनाये रखने की प्रवृति।

① दैहिक समस्थिति

② मनोवैज्ञानिक समस्थिति →
- ① मनोवैज्ञानिक प्रदत
- ② कार्य कुशलता के अध्ययन
- ③ आकांक्षा के स्तर सम्बन्धी अध्ययन
- ④ औपचारिक प्रदत

④ चालक सिद्धान्त

चालक की सन्तुष्टि का अर्थ है उद्देश्यों को प्राप्त कर लेना। चालक के प्रत्यय का विकास 1932 में witter ने किया। चालक में व्यक्ति का व्यवहार समय के अनुसार वातावरण के कारण विभिन्न दिशाओं में उद्वेलित रहता है।

BULANDSHAHR

⑤ मैसलो का प्रेरणा सिद्धान्त

गोल्डस्टीन महोदय ने अपनी Organismic Theory of Motivation में कहा है कि अगर देखा जाये तो वास्तव में केवल एक ही प्रमुख मानवीय प्रेरक होता है। जिसे हम आत्म अनुभूति प्रेरक कहते हैं। बाकी सभी प्रेरक जैसे - भूख, प्यास, शक्ति, सम्मान, ज्ञान, इच्छा तथा दूसरे प्राथमिक तथा सामाजिक प्रेरक इसी आत्म अनुभूति प्रेरक को प्राप्त करने के माध्यम हैं।

① मनोदैहिक प्रेरक
② सुरक्षा प्रेरक
③ प्रेम एवं लगाव प्रेरक
④ आत्मसम्मान प्रेरक
⑤ आत्मअनुभूति प्रेरक

(6) अभिप्रेरणा स्वास्थ्य सिद्धान्त

इस सिद्धान्त को उद्योग तथा व्यापार की दृष्टि से प्रस्तुत किया गया था कि कार्य करने वालों के व्यवहार को कौन से कारक प्रभावित करते हैं इन्होंने आवश्यकताओं को दो वर्गों में बांटा है–

(1) स्वास्थ्य कारक → (1) कार्य करने की परिस्थितियाँ
(2) विद्यालय की नीति
(3) पर्यवेक्षण के रूप
(4) विद्यालय का स्तर

(2) प्रेरक → (1) निष्पत्ति
(2) मान्यता
(3) उत्तरदायित्व
(4) प्रगति
(5) व्यक्तिगत विकास

BULANDSHAHR

(7) सुखवाद का सिद्धान्त

मानव की यह सुलभ प्रवृति है कि वह अधिक से अधिक सुख प्राप्त करना चाहता है तथा दुखों से बचना चाहता है अर्थात कम दुख झेलना चाहता है इसे हम सुख का सिद्धान्त कहते हैं।

(8) मरे का आवश्यकता सिद्धान्त

इस सिद्धान्त का विकास 1938 के आसपास किया था। आवश्यकता एक अर्थ कल्पित शक्ति है जो मानसिक स्तर पर व्यक्ति के संबोध संवेदनाओं बुद्धि आदि को संगठित कर उसके व्यवहार को नियन्त्रित करती है।

(1) अपमान (2) निष्पत्ति (3) अभिग्रहण (4) सम्बन्धन (5) आक्रमण (6) संचय (7) स्वायत्तता (8) विपरीत क्रिया (9) निर्माण (10) सम्मान (11) प्रतिरक्षण (12) प्रभुत्व (13) प्रदर्शन (14) स्पष्टीकरण (15) हानि बचाव (16) पतन बचाव (17) पोषण (18) व्यवस्था (19) खेलना (20) परित्याग (21) धारणा (22) काम (23) परिश्रम (24) उच्चता (25) समझ (26) संवेदनशीलता

UNIT – IV

मानसिक स्वास्थ्य (MENTAL HEALTH)

फ्रैण्डसन के अनुसार → "मानसिक स्वास्थ्य और अधिगम में सफलता का परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध है।"

मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ → मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान से अभिप्राय उस विज्ञान से है जिसके अन्तर्गत व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी उपायों, सिद्धान्तों एवं नियमों का अध्ययन किया जाता है।

ड्रेवर के अनुसार – "मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का अर्थ है मानसिक स्वास्थ्य के नियमों की खोज करना और उनको सुरक्षित रखने के उपाय करना।"

क्रो एवं क्रो के अनुसार — "मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान वह विज्ञान है जिसका सम्बन्ध मानव कल्याण से है। और जो मानव सम्बन्धों के सभी क्षेत्रों को प्रभावित करता है।"

मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान के कार्य एवं उद्देश्य

1. मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा
2. मानसिक रोगों की रोकथाम
3. मानसिक रोगों का उपचार करना

मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति के गुण

1. सहनशीलता
2. आत्मविश्वास
3. संवेगात्मक परिपक्वता
4. सामंजस्य की योग्यता
5. नियमित जीवन
6. निर्णय करने की क्षमता
7. आत्मसम्मान की भावना
8. आत्म-मूल्यांकन की क्षमता
9. व्यक्तिगत सुरक्षा की भावना

बालक के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले तत्व

① परिवार से सम्बन्धित कारण →

① पारिवारिक निर्धनता

② परिवार का कठोर अनुशासन

③ माता पिता का पक्षपात - पूर्णव्यवहार

④ माता पिता की अत्यधिक ममता

⑤ माता पिता के ऊँचे आदर्शों का प्रभाव

② विद्यालय से सम्बन्धित कारण →

① विद्यालय का वातावरण

② अनुचित पाठ्यक्रम

③ दोषपूर्ण शिक्षण विधियाँ

④ दोषपूर्ण परीक्षा प्रणाली

⑤ शिक्षक के व्यक्तित्व का प्रभाव

⑥ समाज से सम्बन्धित कारण

⑦ व्यक्तिगत कारण

बालक के मानसिक स्वास्थ्य को अच्छा बनाये रखने के उपाय

1) परिवार के कार्य → ① विकास हेतु आवश्यक सुविधाएँ प्रदान करना

② माता पिता का सद्व्यवहार

③ परिवार का वातावरण

2) शिक्षक व विद्यालय के कार्य → ① शिक्षकों का सहानुभूति व्यवहार

② अनुशासन

③ उपयुक्त पाठ्यक्रम

(4) सन्तुलित गृहकार्य
(5) पाठ्यसहगामी क्रियाओं का आयोजन
(6) शैक्षिक निर्देशन
(7) धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा की व्यवस्था

(3) समाज के कार्य

अध्यापकों के मानसिक स्वास्थ्य में बाधा डालने वाले तत्व

(1) अपर्याप्त वेतन
(2) अधिक कार्यभार
(3) व्यावसायिक सुरक्षा का अभाव
(4) शैक्षिक उपकरणों का अभाव
(5) समाज में आदर का अभाव
(6) विद्यालय की आतंकमयी शासन व्यवस्था
(7) मनोरंजन का अभाव
(8) अध्यापकों में पारस्परिक संघर्ष
(9) निरीक्षण एवं परीक्षण की समस्या

शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य की उन्नति के उपाय

(1) उचित वेतन
(2) कार्यभार में कमी
(3) शैक्षिक सुविधायें
(4) विद्यालय का वातावरण
(5) अध्यापक संघ का संगठन
(6) अध्यापक का स्वयं सहयोग
(7) मनोरंजन की व्यवस्था

समायोजन ADJUSTMENT

कुप्पुस्वामी के अनुसार — "समायोजन के फलस्वरूप प्रसन्नता होती है क्योंकि इससे संवेगात्मक द्वन्द्व और तनाव दूर हो जाते हैं।
समायोजन (सम+ आयोजन) का शाब्दिक अर्थ होता है अच्छी तरह या समान रूप से व्यवस्था करना। अतः समायोजन सुव्यवस्थित ढंग से

परिस्थितियों के साथ अनुकूलन की प्रक्रिया है जिससे व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। तथा मानसिक द्वन्द उत्पन्न नहीं हो पाता है।

गेट्स के अनुसार - "समायोजन निरंतर चलनेवाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच सन्तुलित सम्बन्ध रखने के लिए अपने व्यवहार मे परिवर्तन करता है।"

सुसमायोजित व्यक्ति → वह है जिसकी आवश्यकताएँ एवं तृप्तियाँ सामाजिक दृष्टिकोण तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की स्वीकृति के साथ संगठित हो।

कुसमायोजित व्यक्ति → कुसमायोजन व्यक्ति और उसके असन्तुलन का उल्लेख करता है।

भग्नाशा या कुण्ठा FRUSTRATION

कुण्ठा या भग्नाशा व्यक्ति की वह मानसिक स्थिति और भावात्मक दशा है जो अनेक रुकावटों तथा परस्पर विरोधी विकल्पों का सामना करने पर उत्पन्न होती है,

गुड के अनुसार — "किसी इच्छा या आवश्यकता में बाधा पड़ने से उत्पन्न होने वाला संवेगात्मक तनाव।

कारण

① भौतिक वातावरण
② सामाजिक वातावरण
③ अन्य व्यक्ति
④ आर्थिक कारक
⑤ वर्तमान परिस्थितियाँ और दशाएँ
⑥ विरोधी उद्देश्य और इच्छाएँ
⑦ नैतिक आदर्श

मानसिक द्वन्द्व

व्यक्ति को जब विरोधी विचारों, इच्छाओं, उद्देश्यों आदि का सामना करना

पड़ता है तो उसके मस्तिष्क में संघर्ष आरम्भ हो जाता है इसे मानसिक द्वंद कहते हैं।
फ्रायड के अनुसार → "इदम, अहम् और परम् अहम् के बीच सामन्जस्य का अभाव होने से मानसिक द्वन्द्व होता है।"

कारण

① जैविकीय और भौतिक कारण
② संवेगात्मक कारण
③ सामाजिक कारण
④ आर्थिक कारण

मानसिक द्वन्द्व के दुष्प्रभाव

① असामान्य मानसिक क्रियाएँ
② असामान्य संवेग प्रदर्शन
③ असामाजिक व्यवहार
④ अपराधी प्रवृति
⑤ मानसिक रूग्णता

मानसिक द्वन्द्व को सुलझाने और तनाव को कम करने के उपाय

① प्रत्यक्ष उपाय → ① बाधाओं को दूर करना
② अन्य मार्ग खोजना
③ अन्य लक्ष्यों का प्रतिस्थापन
④ विश्लेषण एवं निर्णय

② अप्रत्यक्ष उपाय → ① शोधन
② परावर्तन

1. प्रतिगमन
2. दिवास्वप्न
3. तादात्म्य स्थापित करना
4. आश्रित होना
5. औचित्य स्थापना
6. दमन
7. प्रक्षेपण
8. विपरीत रचना

(4) क्षतिपूरक विधियाँ

(5) आक्रामक उपाय

फ्रायड की रक्षा युक्तियाँ

1. दमन
2. शमन
3. प्रतिगमन
4. तादात्मीकरण
5. युक्तिकरण
6. प्रक्षेपण
7. क्षतिपूर्ति
8. मार्गान्तीकरण
9. प्रतिक्रिया निर्माण
10. रूपान्तरीकरण
11. दिवास्वप्न
12. पलायन
13. अस्वीकृति
14. नकारात्मकता

UNIT–V

व्यक्तित्व PERSONALITY

व्यक्तित्व शब्द अंग्रेजी भाषा के पर्सनेलिटी शब्द का पर्याय है जो लैटिन भाषा के पर्सोना शब्द से लिया गया है। पर्सोना का अंग्रेजी में पर्याय mask है जो नकाब या मुखावरण कहलाता है।

वुडवर्थ के अनुसार – "व्यक्तित्व, व्यक्ति की सम्पूर्ण गुणात्मकता है।"

गिलफोर्ड के अनुसार – "हम व्यक्तित्व को शीलगुणों के एक संकलित नमूने के रूप में परिभाषित कर सकते हैं।"

व्यक्तित्व संरचना

फ्रायड 1927 के अनुसार, व्यक्तित्व तीन तत्वों से निर्मित है – इदं Id, अहं Ego तथा आदर्श अहं Super Ego – इदं का सम्बन्ध अचेतन मन से है। इसकी प्रकृति पशुप्रवृत्यात्मक है और यह सुखवादी सिद्धान्त से है।

अहं इदं का परिष्कृत और विकसित रूप है यह तार्किक, व्यवस्थित और विवेकपूर्ण होता है। और परिष्कृत प्रतिक्रियाओं द्वारा यथार्थ का ध्यान रखते हुए इदं की इच्छाओं की पूर्ति कराता है।

आदर्श अहं – अहं का विकसित रूप है और व्यक्तित्व का अन्त में विकसित होने वाला नैतिक पक्ष है, इसके विकास में बाल्यावस्था की तादात्मीकरण तथा अन्तःक्षेपण आदि क्रियाएँ सहायता करती हैं।

व्यक्तित्व की निर्मायें अथवा निर्धारक

① जैविक या वंशानुक्रम सम्बन्धी कारक →

① शारीरिक संरचना

② रसायनिक या ग्रन्थि आधार

② मनोवैज्ञानिक कारक

③ सामाजिक कारक

① परिवार
② पड़ोस
③ मित्र मण्डली
④ विद्यालय

⑤ सांस्कृतिक कारक →
① गत्यात्मक संगठन
② संगठन एवं व्यवस्था
③ मनोदैहिक
④ निर्धारित करना
⑤ परिवेश के प्रति विशिष्ट समायोजन

व्यक्तित्व के शीलगुण (लक्षण)

शीलगुणों का आशय व्यक्ति की अपनी विशेषताओं से है व समुचित परीक्षणों द्वारा यह निर्धारित किया जा सकता है कि कोई व्यक्ति किसी शीलगुण के सातत्यक पर कहाँ स्थान प्राप्त कर रहा है जैसे मापनियों का उपयोग करके यह निश्चित किया जा सकता है कि व्यक्ति में मात्रा-मकता, संवेगात्मक स्थिरता, निर्भरता, सर्जनात्मकता या अन्य विशेषताओं का स्तर क्या है,

प्रोप्रियम

प्रोप्रियम, एक लैटिन शब्द Propriuus से बना है जिसका अर्थ अपना होता है ऑलपोर्ट के अनुसार प्रोप्रियम से तात्पर्य व्यक्तित्व के उन सभी पहलुओं से होता है जिससे उसमें आन्तरिक एकता तथा संगतता आती है। न अवस्थाओं का वर्णन किया है।
① शारीरिक - आत्मन ② आत्म पहचान ③ आत्मसम्मान
④ आत्म विस्तार ⑤ आत्म प्रतिमा ⑥ उपयुक्त प्रयास

⑦ युक्तिसंगत समायोजन के रूप में आत्मन्

व्यक्तित्व की गतिकी

① कार्यात्मक स्वायत्तता → कार्यात्मक स्वायत्तता का संप्रत्यय एक प्रेरणात्मक संप्रत्यय है कार्यात्मक स्वायत्तता का संप्रत्यय यह बतलाता है कि एक सामान्य एवं परिपक्व व्यक्ति के कुछ अभिप्रेरक अपने उन गत अनुभूतियों से कार्यात्मक रूप से संबंधित नहीं होते हैं।

① संतनन कार्यात्मक स्वायत्तता
② उपयुक्त कार्यात्मक स्वायत्तता

② चेतन एवं अचेतन अभिप्रेरणा → एक स्वस्थ व्यस्क इस बात से पूर्णतः अवगत होता है कि वह क्या कर रहा है तथा क्यों कर रहा है एक परिपक्व एवं सामान्य वयस्क का व्यक्तित्व पूर्णतः चेतन के नियंत्रण में होता है।

व्यक्तित्व के सिद्धान्त

① व्यक्तित्व संरचना सम्बन्धी सिद्धान्त

① हिप्पोक्रेट्स द्वारा वर्गीकरण → ① कफ प्रवृति या क्रोधी
② काले पित्त वाले या निराशावादी व्यक्ति
③ आशावादी व्यक्ति

② क्रेश्मर का वर्गीकरण → ① खिलाड़ी प्रवृति वाले
② नाटे व्यक्ति
③ निर्बल शरीर वाले

③ शैल्डन का वर्गीकरण → ① गोलाकार या एन्डोमारफिक
② आयातकार या मीसोमारफिक
③ लम्बाकार या एक्टोमारफिक

④ स्प्रैंगर द्वारा वर्गीकरण → ① सैद्धान्तिक व्यक्ति
② कलात्मक व्यक्ति
③ राजनैतिक व्यक्ति
④ धार्मिक व्यक्ति
⑤ सामाजिक व्यक्ति

⑤ युग द्वारा वर्गीकरण → ① अन्तर्मुखी
② बहिर्मुखी
③ मध्यमुखी

⑥ आधुनिक वर्गीकरण → ① भावुक व्यक्ति
② कर्मशील व्यक्ति
③ विचारशील व्यक्ति

② व्यक्तित्व सम्बन्धी विशेषक सिद्धान्त

① विशेषक का अर्थ → व्यक्तित्व सम्बन्धी गुण या विशेषताएँ जिन्हें हम विशेषक भी कहते हैं, एक व्यक्ति का व्यक्तित्व तथा व्यवहार दूसरे व्यक्ति के व्यक्तित्व तथा व्यवहार से किस प्रकार भिन्न है।

① ऑलपोर्ट विशेषक सिद्धान्त → ऑलपोर्ट ने शीलगुण को उद्दीपकों के शीलगुण विभिन्न प्रकारों के प्रति समान ढंग से अनुक्रिया करने का झुकाव या प्रवृत्ति के रूप में परिभाषित किया है। अपने वातावरण के उद्दीपक पहलुओं की ओर संगत एवं सहनीय ढंग से अनुक्रिया करने के तरीकों को शीलगुण कहा जाता है।

① प्रधान विशेषक
② केन्द्रीय शीलगुण
③ गौण शीलगुण

② कैटेल विशेषक सिद्धान्त → कैटेल का विश्वास था कि कुछ सामान्य विशेषक होते हैं जो सभी व्यक्तियों में कुछ न कुछ मात्रा में पाये जाते हैं तथा कुछ विशिष्ट विशेषक होते हैं जो कुछ विशेष व्यक्तियों में ही उपस्थित होते हैं।

③ फ्रायड का व्यक्तित्व सिद्धान्त – मोर्विया के एक नगर में 6 मई 1855 को साधारण यहूदी परिवार में फ्रायड का जन्म हुआ। बाद में पूरा परिवार वियना चला गया। यहाँ फ्रायड ने मृत्यु के एक वर्ष पूर्व तक अपना जीवन व्यतीत किया। बाल्यावस्था में फ्रायड ने बाइबिल का अध्ययन किया। फ्रायड ने तीन दशाएँ बताई हैं।

① चेतन
② अचेतन
③ अर्द्धचेतन

इदं Id
अहं Ego
परम अहं SuperEgo

फ्रायड के सिद्धान्त के कुछ अन्य मुख्य प्रत्यय

ईडी
कामुकता
सग्रन्थि

④ स्वमोह
⑤ मूल प्रवृत्तियाँ

फ्रॉयड द्वारा प्रतिपादित मनोलैंगिक विकास की 5 अवस्थाएँ

(1) मुखावस्था
(2) गुदावस्था
(3) लिंग प्रधानावस्था
(4) अव्यक्तावस्था
(5) जननेन्द्रियावस्था।

व्यक्तित्व का मापन

व्यक्तित्व मापन का विकास → 19 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में गॉल तथा स्परजीम ने मुखाकृति तथा खोपड़ी के उभारों के आधार पर व्यक्ति में सैंतीस शक्तियों की सूची दी जिसमें जीने की इच्छा से लेकर विनाश प्रवृति तक कितनी ही प्रवृतियाँ सम्मलित थी।

व्यक्तित्व मापन को तीन वर्गों में बाँटा है।

(1) व्यक्तित्व परिसूचियाँ

(1) प्रश्नावली →
(1) प्रतिबन्धित प्रश्नावली
(2) खुली प्रश्नावली
(3) चित्रित प्रश्नावली
(4) मिश्रित प्रश्नावली

(2) व्यावहारिक या प्रत्यक्ष विधियाँ

(1) साक्षात्कार →
1. निर्देशित साक्षात्कार
2. अनिर्देशित साक्षात्कार
3. समाहारक साक्षात्कार

(2) निरीक्षण →
1. बाह्य निरीक्षण
2. स्वयं निरीक्षण →
    1. प्रत्यक्ष अवलोकन
    2. अप्रत्यक्ष अवलोकन

(3) जीवन इतिहास विधि →
1. योजना बनाना
2. आँकड़े एकत्रित करना
3. व्यक्ति वृत लिखना
4. निदान एवं मूल्यांकन

(4) निर्धारण मापनी →
1. संख्यात्मक मापदण्ड
2. रेखांकित मापदण्ड
3. संचयी अंक मापदण्ड
4. मानक मापदण्ड

(5) आत्मकथा →
1. निर्देशित आत्मकथा
2. व्यक्तिगत इतिहास

(6) समाजमिति

(7) संचयी आलेखपत्र → (1) एक पत्तलेखा
(2) पैकेट या परत
(3) संकलित परत

(8) चैकलिस्ट

(9) एनेकडोटल रिकार्ड्स

(3) प्रक्षेपी प्रविधियाँ

प्रेक्षपण का अर्थ, अपने विचारों, भावों एवं कमियों को अन्य व्यक्तियों या पदार्थों के माध्यम से व्यक्त करना है।

प्रक्षेपी प्रविधियों के प्रकार

(1) बोध परीक्षण → (1) प्रासंगात्मक बोध परीक्षण
(2) बालक बोध परीक्षण

(2) स्याही के धब्बों का परीक्षण → (1) रोर्शा स्याही धब्बे का परीक्षण
(2) होल्जमैन स्याही धब्बे का परीक्षण

(3) शब्द साहचर्य परीक्षण → (1) मुक्त साहचर्य परीक्षण
(2) आंशिक साहचर्य परीक्षण
(3) नियन्त्रित साहचर्य परीक्षण

(4) चित्र साहचर्य परीक्षण (5) वाक्य पूर्ति परीक्षण (6) खेल प्रविधि
(7) मनो-नाटकीय विधि (8) शाब्दिक प्रक्षेपण परीक्षण

UNIT-VI

बुद्धि एवं सृजनात्मकता

बुद्धि एक ऐसा मानसिक तत्व है। जिसके कारण दो बात को जो एक ही ढंग से पढ़कर जाने पर उनको समझने के स्तर में अन्तर आ जाता है। जिसके कारण ही दो व्यक्तियों की स्मरण शक्ति में भिन्नता दिखाई देती है।

रौस के अनुसार → "नवीन परिस्थितियों से चेतन अनुकूलन ही बुद्धि है"

बकिन्घम के अनुसार → "सीखने की योग्यता ही बुद्धि है।

बुद्धि के प्रकार

① सामाजिक बुद्धि
② अमूर्त बुद्धि
③ मूर्त बुद्धि

सांवेगिक बुद्धि

सांवेगिक बुद्धि का एक महत्वपूर्ण योगदान मानव संसाधन योजना व्यवसाय, नौकरी, साक्षात्कार, चयन, प्रबन्धन विकास, ग्राहक सम्बन्ध एवं सेवाएं आदि क्षेत्रों में भी माना जाता है। सांवेगिक बुद्धि का सम्बन्ध दो प्रत्ययों से घनिष्ठ माना जाता है। Love and spirituality तथा multiple Intelligence Theory इसमें Love and spirituality कार्य के प्रति सहानुभूति एवं संवेदना या सहृदयता उत्पन्न करता है।

सांवेगिक बुद्धि की विशेषताएँ

① आत्म जागृति
② आत्म नियन्त्रण
③ अभिप्रेरणा

④ परानुभूति
⑤ सामाजिक चेतना

सांवेगिक बुद्धि का महत्व

① कार्यनिष्पादन
② शारीरिक स्वास्थ्य
③ मानसिक स्वास्थ्य
④ सम्बन्ध

सांवेगिक बुद्धि को विकसित करने के उपाय

① तनाव शीघ्रता से कम करें
② भावनात्मक चेतना
③ अशाब्दिक सम्प्रेषण
④ हँसी मजाक एवं चुनौतियों से खेलें
⑤ संघर्षों का सकारात्मक ज्ञान

बुद्धि के सिद्धान्त

① बिने का एक तत्व सिद्धान्त
② स्पीयरमैन का द्वि-तत्व सिद्धान्त
③ थार्नडाइक का बहुतत्व सिद्धान्त
④ थर्स्टन का समूह तत्व सिद्धान्त
⑤ थामसन का प्रतिदर्श सिद्धान्त
⑥ बर्नन का क्रमिक महत्व सिद्धान्त
⑦ गिल्फोर्ड का त्रि-आयाम सिद्धान्त

बुद्धिमापन

बुद्धि मापन की आवश्यकता वैयक्तिक भिन्नताओं एवं बुद्धि दौर्बल्य बालकों की समस्या के परिणामस्वरूप ही अनुभव की गई है।

बुद्धिलब्धि का सूत्र

$$\text{बुद्धि लब्धि (I.Q.)} = \frac{\text{मानसिक आयु M.A}}{\text{वास्तविक आयु C.A}} \times 100$$

बुद्धि लब्धि का वितरण

बुद्धिलब्धि I.Q.	प्रतिशत %	वर्ग Category
140 से अधिक	1	प्रतिभाशाली (Genius)
121-140	5	प्रखर बुद्धि (Superior)
111-120	14	तीव्र बुद्धि (Above Average)
91-110	60	सामान्य बुद्धि (Average)
81-90	14	मन्द बुद्धि (Feeble minded)
71-80	5	अल्प बुद्धि (Dull)
71 से कम	1	जड़ बुद्धि (Idiot, Imbecile Morone)

बुद्धिलब्धि के कारक

1. सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक कारक
2. पारिवारिक वातावरण
3. व्यवसाय
4. शहरी और ग्रामीण वातावरण
5. शिक्षा स्तर

बुद्धि परीक्षण

अमेरीका मे बुद्धि परीक्षाओं का आविर्भाव लगभग 1887 के आसपास हुआ।

बुद्धि परीक्षणों का वर्गीकरण

① व्यक्तिगत परीक्षण – ① शाब्दिक एवंगति परीक्षण
② गति एवं अशाब्दिक परीक्षण

व्यक्तिगत शाब्दिक परीक्षाएँ

① बिने साइमन बुद्धि परीक्षण
② स्टेनफोर्ड बिने परीक्षण – ① प्रश्नों के प्रारूप
② प्रशासन एवं फलांकन

③ वैश्लर वैलेव्यू बुद्धि परीक्षण – ① सामान्य सूचना
② सामान्य बोध
③ अंकगणितीय तर्क
④ अंक विस्तार
⑤ समानता
⑥ शब्द भण्डार

परीक्षण प्रमापीकरण
वैश्लर परीक्षण की समीक्षा

④ बर्ट तर्क-शक्ति परीक्षण

सामूहिक शाब्दिक परीक्षण

1. समानता एवं विभिन्नता
2. सादृश्य
3. आवश्यक
4. विलोम शब्द
5. तुलना
6. पर्याय
7. दिशाबोध
8. अंकगणितीय समस्याएँ
9. क्रमिक संख्या अथवा संख्याओं का क्रम

1. आर्मी अल्फा परीक्षण
2. आर्मी जनरल वर्गीकरण परीक्षण
3. टरमन मानसिक योग्यता समूह परीक्षण
4. डा० सोहन लाल बुद्धि परीक्षण

व्यक्तिगत अशाब्दिक अथवा क्रियात्मक परीक्षण

1. चित्रांकन परीक्षण
2. चित्रपूर्ति परीक्षण
3. वस्तुसंयोजन
4. अंकप्रतीक
5. पोर्टियस भूल-भुलैया परीक्षण
6. आकार फलक परीक्षण
7. भाटिया क्रियात्मक परीक्षण माला
   ↓
   1. कोह्स ब्लाक डिजाइन टैस्ट
   2. अलेक्जेंडर पास एलांग परीक्षण
   3. पैटर्न ड्राइंग टैस्ट
   4. तात्कालिक स्मृति परीक्षण

(5) चित्ररचना परीक्षण

(6) मैरिल पामर ब्लॉक बिल्डिंग परीक्षण

सामूहिक क्रियात्मक बुद्धि परीक्षण

1) शिकागो अशाब्दिक परीक्षा -

2) पिगन अशाब्दिक परीक्षण →
   1) समानता
   2) विभिन्नता
   3) सादृश्य
   4) आकृतिक्रम

3) कैटिल का कल्चर फ्री टैस्ट

4) डॉ० गुहाकृत मनुष्य कर्षण परीक्षण

5) रैविन प्रोग्रेसिव मैट्रिसेज

6) आर्मी बीटा परीक्षण

7) पिन्टनर पैटरसन टैस्ट → 1) चित्र खींचना
   2) व्युत्क्रम आलेखन
   3) प्रतिकृति संश्लेषण

सृजनात्मकता CREATIVITY

रोड्स ने सृजनात्मकता के चार तत्व - व्यक्ति, प्रक्रिया, मापन व वातावरण में अन्तःक्रिया तथा उत्पाद - बताए है

टारेन्स ने 1964 में नवीन विचारों या परिकल्पनाओं का निर्माण करने इनका परीक्षण करने तथा परिणामों का सम्प्रेषण करने की प्रक्रिया सृजनात्मकता कहलाती है।

पासी के अनुसार → सृजनात्मकता एक बहुविमीय गुण है जो व्यक्तियों में भेदीयरूप से वितरित रहता है और जिसमें मुख्यत: समस्या के समाधान करने, प्रवाह, लचीलापन, मौलिकता, जिज्ञासा व दृढ़ता के तत्व निहित होते हैं।

सृजनात्मकता के स्तर

1. अभिव्यंजक सृजनात्मकता
2. उत्पादक सृजनात्मकता
3. आविष्कारशील सृजनात्मकता
4. नवाचारात्मक सृजनात्मकता
5. आविर्भावात्मक सृजनात्मकता

सृजनात्मकता में निहित योग्यताएँ

1. प्रवाह चिन्तन
2. लचीला चिन्तन
3. मौलिक चिन्तन
4. विस्तृत चिन्तन
5. जटिल चिन्तन
6. जोखिम उठाने की प्रवृति
7. जिज्ञासा
8. पुन: परिभाषा

सृजनशील व्यक्तित्व की विशेषताएँ

1. जोखिम उठाना
2. त्रुटि करना
3. अंन्त: मुखी
4. परिश्रमी
5. व्यक्तिवादी
6. चिन्तन में स्वतन्त्रता
7. उद्योगी
8. संवेगात्मक
9. प्रबल
10. पक्का इरादा
11. साहसिक
12. तीव्र भावना
13. पूर्ण
14. जोखिम उठाने की क्षमता
15. डरपोक
16. वात्सल्य
17. दृढ़
18. निश्छल आदि।

सृजनशीलता तथा बुद्धि

वालस ने पाया कि सृजनशीलता जैसी कि सृजनशीलता परीक्षणों द्वारा मापी जाती है वह बुद्धि से स्वतन्त्र होती है, किन्तु वह सृजनशीलता जो शिक्षकों द्वारा मूल्यांकन करायी जाती है वह बुद्धि से आवश्यक रूप से सम्बन्धित होती है इससे पता चलता है कि शिक्षक सृजनशीलता को बुद्धि के रूप में देखते हैं।

सृजनशील व्यक्ति की विशेषता

① प्रज्ञा

② अभिप्रेरणात्मक रुचि

③ सृजनात्मक व्यक्तित्व

कुछ प्रमुख सृजनात्मकता परीक्षण

1) टॉरेन्स का सृजनात्मकता परीक्षण →

① निष्पादन कार्य

② अशाब्दिक कार्य

↓

① पूछो और अनुमान लगाओ परीक्षण

② परिणाम सुधार कार्य

③ खिलौना - कुत्ता

④ अजीब प्रयोग कार्य

② शाब्दिक कार्य

UMASHANKAR

② बाकर मेंहदी सृजनात्मकता परीक्षण →

① सृजनात्मक चिन्तन का शाब्दिक परीक्षण

① यदि ऐसा हो जाये तो

② वस्तुओं के नये-नये प्रयोग

③ नये सम्बन्ध पता लगाना

④ वस्तुओं को मनोरंजक बनाना

② सृजनात्मक चिन्तन का अशाब्दिक परीक्षण

① चित्र

② चित्र-पूर्ति

③ त्रिभुजाकार एवं अण्डाकार आकृति कार्य

③ पासी सृजनात्मकता परीक्षण

सृजनात्मकता विकसित करने की प्रविधियाँ

① मस्तिष्क उद्वेलन (ब्रेन स्टॉर्मिंग) → ब्रेन स्टॉर्मिंग इस सिद्धान्त पर आधारित है कि बालकों को अन्त: क्रिया द्वारा अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है अत: इस प्रविधि का उपयोग करते समय ऐसे साधनों का प्रयोग किया जाता है जो कि बालकों के मस्तिष्क को सामूहिक रूप से विचार विमर्श के लिए गति प्रदान कर सकें

② वाद विवाद विधि → वाद विवाद विधि एक सक्रिय मौखिक विधि है जिसके द्वारा अध्यापक तथा विद्यार्थियों के बीच अन्त: क्रिया के अवसर प्राप्त होते हैं परिणामस्वरूप विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों अभिप्रेरणा तथा भावनाओं में परिवर्तन तथा उचित ज्ञान वर्धन होता है।

विचार विमर्श पद्धति के पद

① विषयवस्तु का चयन
② विचार विमर्श हेतु तैयारियाँ
③ संचालन
④ मूल्यांकन

③ खेलप्रणाली → नालन्दा विशाल शब्द सागर → खेल का सामान्य अर्थ है – चित्त की उमंग या मन बहलाव या व्यायाम के लिए इधर उधर कूद, दौड़ धूप या कोई साधारण कृत्य।

खेल के प्रकार

① परीक्षणात्मक खेल
② गतिशील खेल
③ रचनात्मक खेल
④ लड़ाई के खेल
⑤ बौद्धिक खेल
⑥ अन्य प्रकार के खेल
↓
① स्वतन्त्र ऐच्छिक खेल
② झूठ मूठ के खेल
③ माता सम्बन्धी खेल
④ संवेगात्मक खेल

सिद्धान्त

① अतिरिक्त शक्ति का सिद्धान्त
② पूर्व अभिनय का सिद्धान्त
③ पुनरावृत्ति का सिद्धान्त
④ मूल प्रवृत्ति का सिद्धान्त

(5) पुनः प्राप्ति का सिद्धान्त
(6) परिष्कार का सिद्धान्त
(7) जीवन की क्रियाशीलता का सिद्धान्त

बालक के लिए खेल का महत्व

(1) शारीरिक महत्व
(2) मानसिक महत्व
(3) सामाजिक महत्व
(4) संवेगात्मक महत्व
(5) वैयक्तिक महत्व
(6) नैतिक महत्व
(7) शैक्षिक महत्व
(8) बाल अध्ययन में सहायता
(9) खेल द्वारा चिकित्सा

खेल विधि पर आधारित शिक्षण पद्धतियाँ

(1) किंडरगार्टन पद्धति
(2) मॉण्टेसरी पद्धति
(3) ह्यूरिस्टिक पद्धति
(4) प्रोजेक्ट पद्धति
(5) डाल्टन पद्धति
(6) अन्य शिक्षण पद्धतियाँ

(4) समस्यासमाधान पद्धति

समस्यासमाधान घटनाओं का एक ऐसा समूह है जिसमें मानव किसी विशिष्ट उद्देश्य की उपलब्धि के लिये अधिनियमों अथवा सिद्धान्तों का उपयोग करता है।

ऑसुबेल के अनुसार → "समस्या समाधान में संप्रत्यय का निर्माण तथा अधिगम का आविष्कार सम्मिलित है"

समस्या समाधान पद्धति के पद

(1) समस्या निर्माण तथा चुनाव

(2) समस्या का प्रस्तुतीकरण

(3) उपकल्पनाओं का निर्माण

(4) प्रदत्त संग्रह

(5) प्रदत्त विश्लेषण

(6) निष्कर्ष

(6) विवरण — How Many Triangle Squares, Rectangles are there in the following figure Name theme.